गौड़ीय वेदान्ताचार्य श्रीश्री श्यामानन्दी वैष्णव चूड़ामणि

श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद



श्रीश्री कृष्णगोपालानन्द देव गोस्वामी प्रभुपाद



श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी सेवित

श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर देव जी महाराज

सेवाकुंज, श्रीधाम वृन्दावन

॥ श्रीश्री गौरांग विधुर्जयति ॥

॥ श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर देव विजयते तमाम् ॥

॥ श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु शरणम् ॥

॥ श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु शरणम् ॥

॥ श्रीश्री बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद सहायम् ॥

गौड़ीय वेदान्ताचार्य श्रीश्री श्यामानन्दी वैष्णव चूड़ामणि

श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद

द्वितीय प्रकाश - दश सहस्त्र ग्रन्थ

श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी की शुभ ३३८वीं आविर्भाव तिथि,

अग्रहायण शुक्ला प्रतिपदा, १२ दिसम्बर २०१५

ग्रन्थकार

श्रीश्री गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायाचार्यवर्य

श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द देवगोस्वामी प्रभु वंशावतंस

श्रीश्री कृष्णगोपालानन्द देवगोस्वामी प्रभुपाद

श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर मन्दिर

"जगद्गुरु श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु द्वारपीठ"

[निखिल विश्व के चतु:सम्प्रदाय के वैष्णवों के बावन द्वारपीठों में एक प्रधान द्वारपीठ एवं माध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय के केवल मात्र दो द्वारपीठों में अन्यतम प्रधान द्वारपीठ।]

सेवाकुञ्ज, श्रीधाम वृन्दावन-२८११२१, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रकाशक : प्रभु श्रीश्री श्यामानन्द प्रेम संस्थान ट्रस्ट
श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर मन्दिर, जगद्गुरु श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु द्वारपीठ
सेवाकुञ्ज, लोई बाजार, श्रीधाम वृन्दावन - २८११२१
जिला-मथुरा, (उ. प्र.) भारत

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान :-

१. **श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी मन्दिर**
"जगद्गुरु श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु द्वारपीठ", सेवाकुञ्ज,
श्रीधाम वृन्दावन - २८११२१, जिला-मथुरा (उ.प्र.) भारत

२. **श्रीश्री राधागोविन्द जी मन्दिर**
श्रीश्री श्यामानन्दी गद्दी, श्रीपाट गोपीवल्लभपुर-७२१५०६
पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंग, भारत.

३. **श्रीश्री महाप्रभु जी मन्दिर**
श्रीश्री वासुदेव घोष ठाकुर जी का श्रीपाट, नरपोता तमलुक - ७२१६३६
पूर्व मेदिनीपुर,पश्चिम बंग, भारत.

४. **श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जन्मस्थान**
धारेन्दा, पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंग, भारत

५. **श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जन्मस्थान**
रोहिनी, पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंग, भारत

६. **श्रीश्री मदनमोहन जी मन्दिर**
नाड़ाजोल, पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंग, भारत

७. **श्रीश्री कुञ्जमठ**
श्रीधाम पुरी में श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभुजी का आदि निवास स्थान
गणामल्ल साई, वालिसाई, श्रीधाम पुरी, उड़िसा, भारत.

८. **श्रीश्री बलदेव विद्याभुषण प्रभुपाद जन्मस्थली**
अठान्तर, रेमुना, बालेश्वर, उड़िसा, भारत।

९. **श्रीश्री श्यामानन्द निकेतन**
गौर विहार, पटिया, भुवनेश्वर-७५१०३०, उड़िसा, भारत

१०. **प्रभु श्रीश्री श्यामानन्द आश्रम**
राधानगरी, चन्दनेश्वर, बालेश्वर, उड़िसा, भारत।

उत्सर्ग पत्र

श्रीश्री राधाकृष्ण के सम्मिलित श्रीविग्रह श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी द्वारा प्रवर्त्तित ब्रजगोपी आनुगत्यमयी निष्काम प्रेम भक्ति जिसका मूल आधार है एवं जिसके माध्यम से श्रीश्री राधाकृष्ण की निकुञ्ज सेवा प्राप्ति के द्वारा जीवों का परम कल्याण रूप मंगलकारी श्रीश्री गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय को जिन्होंने विश्व वैष्णव सभा में वेद, पुराण, महापुराण, उपनिषद आदि के सिद्धान्तों के द्वारा सर्वश्रेष्ठ वैष्णव सम्प्रदाय के रूप में स्थापित किया, जिनके तर्क सिद्ध अकाट्य शास्त्रीय युक्ति से पराभूत होकर चतुः सम्प्रदाय के विद्वान, वैष्णव, पण्डितगण ने श्रीश्री गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय को पंचम वैष्णव सम्प्रदाय के रूप में स्वीकृति प्रदान की तथा मान्यता प्रदान की है, जिन्होंने श्रीश्री गोविन्द देव जी की अपार कृपा के चरम पराकाष्ठा स्वरूप एक पक्षकाल में मध्य न्याय प्रस्थान, श्रुति प्रस्थान एवं स्मृति प्रस्थान की भाष्य रचना करके असम्भव कार्य सम्पादन रूप अत्याश्चर्य लीला की थी, श्रीश्री गौड़ीय वेदान्त भाष्यकार, अचिन्त्य भेदाभेद तत्त्ववेता, श्रीश्री श्यामानन्दी वैष्णव चूड़ामणि श्रीश्री बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी के करकमलों में स्व-रचित "श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद" ग्रन्थ को समर्पित कर रहा हूँ।

-श्रीश्री कृष्णगोपालानन्द देव गोस्वामी प्रभुपाद

भूमिका

गौड़ीय वेदान्ताचार्य श्रीश्री श्यामानन्दी वैष्णव चूड़ामणि श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी वैष्णव जगत में उज्ज्वल भास्कर सदृश है। वे केवल उद्भट विद्वान ही नहीं थे वरन् गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के रक्षाकर्ता, त्राणकर्ता भी थे। ईस्वी १७१८ में राजस्थान में जयपुर के निकटवर्ती गलता में चतुः सम्प्रदाय के वैष्णवों की विचार सभा में श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के द्वारा प्रतिष्ठित गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय को अगर श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी ने विशुद्ध वैष्णव सम्प्रदाय के रूप में तथा पंचम् वैष्णव सम्प्रदाय के रूप में स्थापित नहीं किया होता तो गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय का अस्तित्व ही विलुप्त हो जाता।

गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय की रक्षा करने के लिए ठाकुर श्रीश्री राधागोविन्द देव जी महाराज की कृपा से एक पक्षकाल के अन्दर उन्होंने न्याय प्रस्थान के अन्तर्गत श्रीब्रह्मसूत्र के श्रीश्री गोविन्द भाष्य, श्रुति प्रस्थान के अन्तर्गत श्री गोपाल तापनी उपनिषद भाष्य तथा ईशादिदशोपनिषद् भाष्य, स्मृति प्रस्थान के अन्तर्गत श्रीश्री गीताभूषण भाष्य रचना रूप असम्भव कार्य करके जब गलता की विचार सभा में दिखाया तो चतुः सम्प्रदाय के वैष्णवगण चमत्कृत होकर श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी का शिष्यत्व तक ग्रहण करने के लिए उद्यत हो गये थे एवं जयपुर के महाराजा ने अत्याश्चर्य लीलाकारी श्रील बलदेव जी को "विद्याभूषण" उपाधि से विभूषित किया था।

ईस्वी १७१८ में श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी द्वारा गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय को पंचम वैष्णव सम्प्रदाय के रूप में स्थापित किया गया था एवं चतुः सम्प्रदाय के वैष्णव पण्डितों ने भी जयपुर के महाराजा के सम्मुख पंचम सम्प्रदाय के रूप में मान्यता प्रदान की थी।

मगर, अभी भी सभी वैष्णवगण पाँच वैष्णव सम्प्रदाय न कहकर केवल चार वैष्णव सम्प्रदाय का उल्लेख करते है, यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है। अगर श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के अनुयायीगण माध्व सम्प्रदाय के अन्तर्गत हैं तो माध्व भाष्य रहते हुए पृथक रूप से गौड़ीय सम्प्रदाय के भाष्य रचना करने की क्या आवश्यकता पड़ी थी? माध्व सम्प्रदाय के मत, सिद्धान्त एवं भजन के साथ भी गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय का कोई भी सामंजस्य नहीं है। श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी द्वारा प्रवर्त्तित गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय को ईस्वी १७१८ के सिद्धान्त के अनुसार वर्तमान में पृथक सम्प्रदाय के रूप में घोषित करने के लिए एवं वैष्णवों के चतुः सम्प्रदाय के स्थान पर पंच सम्प्रदाय का उल्लेख करने के लिए सभी वैष्णवों को प्रयास करना चाहिए। यह तथ्य भी लक्ष्य करने योग्य है कि, चतुः सम्प्रदाय के प्रमाण के रूप में जो वह व्यास जी की वाणी का उल्लेख किया जाता है, श्री वेदव्यास जी कृत किसी भी ग्रन्थ में इन श्लोकों का कहीं उल्लेख तक भी नहीं है।

श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी की गुरु परम्परा के विषय में भी कुछ लोगों की भ्रान्त धारणा है। श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी श्रीश्री श्यामानन्द शतकम की टीका में, साहित्य कौमुदी के अन्त में एवं छन्दः कौस्तुभ भाष्य के प्रारम्भ में अपने श्रीश्री श्यामानन्दी गुरु परम्परा होने का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है जिससे उनकी गुरु परम्परा जो श्रीश्री श्यामानन्दी है यह स्वतः प्रमाणित है, इसमें कोई संशय नहीं है। इस संक्षिप्त ग्रन्थ के अध्ययन से श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी के दिव्यातिदिव्य जीवन चरित्र के बारे में पाठकों को बहुत सारी नयी उपलब्धियाँ प्राप्त होगी, जो कहीं अन्यत्र उपलब्ध नहीं है।

– **ग्रन्थकार**

गौड़ीय वेदान्त भाष्यकार, श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी का गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में विशेष स्थान है। इन वैष्णवाग्रगण्य को आज भी इस सम्प्रदाय के त्राता के रूप में ही जाना जाता है। ऐसा क्यों है, इस का उत्तर आप इनकी पावन जीवनी को पढ़कर ही पा सकेंगे। श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी के आविर्भाव के सम्बन्ध में श्रील कृष्णचरण दास विरचित "श्रीश्री श्यामानन्द प्रकाश" ग्रन्थ में विशेष रूप से विवरण प्राप्त होता है। एक बार श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी, श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी द्वारा प्रवर्तित विशुद्ध प्रेम भक्ति धर्म का उड़ीसा में प्रचार करते हुए रेमुणा आये, जहाँ उन्होंने श्रीश्री खीरचोरा गोपीनाथ जी की सेवा का पुनः प्रकाश किया। पास ही, श्रीमद्भागवत के टीकाकार श्रील श्रीधर स्वामी पाद का आविर्भाव स्थान दर्शन करके वे 'गौर दांड' पहुँच गये, जहाँ श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी को आवेश ने आ घेरा और वे उस स्थान की रज में लोटने लगे। अकस्मात् उस समय वे बलदेव नाम का उच्चारण करते हुये जोर-जोर से पुकारने लगे। श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी उस समय क्यों बलदेव नाम का उच्चारण करते हुये पुकार रहे थे किसी के समझ में नहीं आया। इस सम्बन्ध में 'श्रीश्री श्यामानन्द प्रकाश' ग्रन्थ में निम्न प्रकार वर्णन प्राप्त होता है।

"बलदेव नाम तीनबार उच्चारिल।
महाप्रभु जैछे नरोत्तमे प्रकाशिल॥

(श्रीश्री श्यामानन्द प्रकाश १०/२२)

(अर्थात् जैसे श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी ने श्रील नरोत्तम ठाकुर जी का प्रकाश करवाया था ऐसे ही श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी ने बलदेव नाम का तीन बार उच्चारण करके श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी का आविर्भाव करवाया था।)

श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी के इसी आह्वान पर उड़ीसा के बालेश्वर जिले के अन्तर्गत रेमुणा के निकटवर्ती अठान्तर नामक गाँव में ईस्वी सन् १६७८ की अग्रहायण शुक्ला प्रतिपदा तिथि को उच्च ब्राह्मण वंश में, श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी का आविर्भाव हुआ था। उनके पितामाता के परिचय एवं बाललीला के सम्बन्ध में विशेष कोई विवरण प्राप्त नहीं होता है। गाँव की पाठशाला में प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात्, वे उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिये, चिल्का ह्रद के दूसरी ओर चले गये। वहाँ उन्होंने विद्वान पंडितों से व्याकरण, अलंकार तथा न्याय शास्त्र आदि का अध्ययन किया, किन्तु इतने पर भी उनकी विद्या अर्जन करने की प्यास नहीं बुझी। इसलिये वे कर्नाटक पहुँच कर तत्त्ववादी माध्व सम्प्रदाय के शिष्य बनकर, वेदान्त का अध्ययन करने लगे। इसी बीच उन्होंने सन्यास भी ग्रहण कर लिया। वेदान्त का अध्ययन समाप्त करके, द्वैत वेदान्ती श्रीबलदेव जी, मन में दिग्विजय की आकांक्षा रखकर, भारत भ्रमण के लिए निकल पड़े। घूमते-घूमते नीलाचल क्षेत्र श्रीधाम पुरी पहुँच कर, उन्होंने वहाँ के समस्त पंडितों को शास्त्र तर्क से परास्त कर दिया। फिर वे नीलाचल में श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी की आदि निवास स्थली, श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी के द्वारा सेवित कुंजमठ के तत्कालीन सेवाधिकारी पंडित श्रील राधादामोदर जी से, जो मूल रूप से कान्यकुब्ज के निवासी थे, मिले। श्रील राधादामोदर जी के पांडित्य और विचार धारा से वे बहुत प्रभावित हुए और उनसे षट् संदर्भ का अध्ययन किया।

षट् संदर्भ के अध्ययन तथा श्रील राधादामोदर जी से निकट सम्पर्क के कारण, श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी, श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी द्वारा प्रवर्त्तित गौड़ीय वैष्णव धर्म के सिद्धान्त तथा आदर्शों के प्रति प्रबल आकर्षण अनुभव करने लगे। गौड़ीय वैष्णव धर्म की श्रेष्ठता को हृदयंगम करके वे इतने प्रभावित हुए कि

अंततः उन्होंने श्यामानन्दी गुरु परम्परा में, श्रील राधादामोदर जी से दीक्षा ग्रहण कर ली।

श्रील बलदेव जी ने अपनी गुरु परम्परा के विषय में श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के द्वारा विरचित "श्रीश्री श्यामानन्द शतकम" की टीका के आरम्भ में एवं अपने द्वारा कृत "साहित्य कौमुदी" के अन्त में स्पष्ट रूप से लिखा है कि –

आनन्दयति श्यामां रसिकान्, नयनानि च स्वधामनि यः।
विस्मापक दामोदर लीलोहवतु नः स गोविन्दः॥

(अर्थात् श्रीश्रीगोविन्द देव जी आचार्य वपु में, श्रीगुरुपरम्परा से नूपुर प्रदान द्वारा श्यामाजी को आनंद प्रदान करके, श्रीश्री श्यामानन्द देव, श्रीश्री रसिकानन्द देव, श्रीश्री नयनानन्द देव एवं अति आश्चर्यकारक लीला करने वाले श्रीगुरुदेव श्रील राधादामोदर रूप में अपने धाम में अपने शिष्यों के साथ हमारी रक्षा करें।)

"छन्दः कौस्तुभ" के भाष्य के आरम्भ में भी उन्होंने लिखा है कि–

अर्चित नयनानन्दो राधा दामोदरो गुरुर्जीयात्।
विवृनोमि यस्य कृपया छन्दः कौस्तुभमहं मितवाक्॥

अर्थात् जिनके द्वारा परम गुरुदेव श्रीश्री नयनानन्द देव जी आराधित हैं, वे श्रीगुरुदेव श्रील राधादामोदर जययुक्त हों, जिनकी कृपा से, उनके द्वारा रचित छन्दः कौस्तुभ का मैं संक्षेप में वर्णन कर रहा हूँ।

उपरोक्त श्लोकों के अतिरिक्त उन्होंने "छन्द कौस्तुभ" के भाष्य के अंत में यह भी लिखा है कि–

श्रीराधादामोदर शिष्यो विद्याभूषणो नाम्ना।
छंदः कौस्तुभः शास्त्रे भाष्यमिदं सम्प्रति व्यद्धात्॥

(अर्थात् श्रील राधादामोदर जी के शिष्य, श्रीविद्याभूषण नामक व्यक्ति ने "छंदः कौस्तुभ" शास्त्र के भाष्य की अभी अभी रचना की है।)

उपरोक्त तथ्यों से श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी की गुरु परम्परा इस प्रकार सिद्ध होती है –

१) श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु
२) श्रीश्री गौरीदास पंडित ठाकुर
३) श्रीश्री हृदयचैतन्य अधिकारी ठाकुर
४) श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु
५) श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु
६) श्रीश्री नयनानन्द देव गोस्वामी प्रभुपाद
७) श्रील राधा दामोदर प्रभुपाद
८) श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद

श्रील राधादामोदर जी से दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी 'एकान्ती गोविंद दास' नाम पाकर, श्रीधाम पुरी से श्रीधाम वृन्दावन में आ गए, जहाँ वे सेवाकुंज मौहल्ला में स्थित श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी के द्वारा सेवित श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर मंदिर में रहने लगे। कहा जाता है कि इसी समय उन्होंने श्री पीताम्बर दास जी से भक्ति शास्त्र तथा श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती पाद से श्रीमद्‌भागवत का अध्ययन किया।

जैसा कि आप सभी जानते हैं, मुगल सम्राट औरंगज़ेब में धार्मिक सहिष्णुता नाम मात्र भी नहीं थी। वह कट्टर सुन्नी मुसलमान था और दूसरे धर्म उसे फूटी आँख भी नहीं सुहाते थे। अपने प्रबल हिन्दु विद्वेष के कारण उसने ईस्वी सन १६६९ में, श्री वृन्दावन धाम के प्रतिष्ठित हिन्दु देवालयों एवं उनमें विराजमान श्रीविग्रहों को नष्ट करने के लिए अपनी एक विशाल सेना की टुकड़ी भेज दी। ठाकुर जी की कृपा से देवालयों के सेवाधिकारियों को इस बात का कुछ पहले ही पता चल गया। उस समय श्रीधाम वृन्दावन के सबसे अधिक प्रतिष्ठित श्रीश्री राधागोविन्द देव जी मन्दिर के सेवकगण, श्रीश्री ठाकुर जी के श्रीविग्रह

को गुप्तरूप से पहले श्रीश्री राधाकुण्ड और फिर बाद में काम्यवन में ले गये। काम्यवन से ठाकुर जी को जयपुर के महाराजा मिर्ज़ा जयसिंह प्रथम के ज्येष्ठपुत्र श्रीराम सिंह के आश्रय में पहुँचा दिया गया। श्रीश्री राधागोविन्द देव जी, ईस्वी सन १६९१ से १७०७ तक जयपुर राज्य की तत्कालीन राजधानी अम्बर से पांच कोस दूर, गोविन्दपुरा नामक स्थान में विराजमान रहे। इसके बाद वे सन् १७१४ से अम्बर में एवं सन् १७१६ से जयपुर के राजप्रासाद चन्द्रमहल के सम्मुख स्थित सूर्यमहल को सुशोभित करने लगे। जो पुजारी इनकी श्रीधाम वृन्दावन में सेवा करते थे, वे ही गोविन्दपुरा, अम्बर और जयपुर में भी सेवा करते रहे। वे सब बंगाली मूल के गौड़ीय वैष्णव ब्राह्मण थे जो श्रीधाम वृन्दावन की प्रथा के अनुसार ही सेवा करते थे। यद्यपि जयपुर राजवंश ने श्रीश्री राधागोविन्द देव जी को अपने संरक्षण में रखा था और इस वंश के राजा इनकी सेवा-पूजा आदि की व्यवस्था भी करते आ रहे थे किन्तु उन पर श्री सम्प्रदाय के अंतर्गत श्री रामानंदी शाखा के महंतों का परम्परा से बहुत प्रभाव चला आ रहा था। इन महंतों की गद्दी जयपुर से करीब एक कोस दूरी पर गलता में थी।

इस राजवंश पर गलता गद्दी के महंतों के प्रभाव की कथा इस प्रकार है। गलता गद्दी की स्थापना अम्बराधीश महाराज पृथ्वीराज जी के राजत्व काल में, पैहारी श्री कृष्ण दास जी के द्वारा की गई थी, जो श्री रामानन्द स्वामी के दूसरे अधस्तन थे। धीरे-धीरे इस गद्दी ने, श्रीसम्प्रदाय के अन्तर्गत आने वाली वैष्णवों की रामानन्दी शाखा की एक प्रसिद्ध पीठ का रूप ले लिया था।

श्रीरामानन्द स्वामी के सुरकुरानन्द नामक शिष्य भी थे, जिनकी शाखा में उनके दसवें अधस्तन हुए श्रीबालानन्द स्वामी जो बहुत ही प्रतापी थे। वे जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय के समकालीन थे। उस समय समूचे भारत में मुगल शासक, हिन्दुओं पर भीषण

अत्याचार में प्रवृत्त थे। उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाया जा रहा था, अन्यथा उनकी हत्या कर दी जाती थी। ऐसे समय में श्री बालानन्दजी ने सूझ-बूझ से काम लेते हुए, चारों वैष्णव सम्प्रदायों के वैष्णवों को इन अत्याचारों के विरुद्ध संगठित करके, प्रत्येक सम्प्रदाय का अलग-अलग एक-एक अखाड़ा बनाया। साथ ही जयपुर के तत्कालीन महाराजा श्रीजयसिंह द्वितीय की सेना को वैष्णव धर्म के अन्तर्गत दीक्षा प्रदान करके एक पृथक अखाड़े में रूपान्तरित कर दिया। उन्होंने सन् १७०२ ईस्वी में प्रयाग समेत भारत के अन्य स्थानों में वैष्णव सम्प्रदायों के पृथक अखाड़ों की स्थापना करने में भी सफलता प्राप्त की। इन कार्यों के कारण श्री बालानन्दजी ने वर्चस्व अर्जित करते हुए, जयपुर के महाराजा पर अपने प्रभाव में असीम वृद्धि अर्जित करके उनके हृदय में अपने प्रति कोमल भावनाएं भी उत्पन्न कर दीं।

प्रत्येक सम्प्रदाय के वैष्णवों को एकत्रित करके मुगलों के अत्याचार से हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिए श्रीबालानन्द स्वामी और गलता गद्दी के तत्कालीन महन्त ने निर्णय लेकर महाराजा को सूचित किया कि गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय, चतुः सम्प्रदाय के अंतर्गत नहीं आता था, अतः इस सम्प्रदाय के वैष्णव ब्राह्मणों द्वारा श्रीश्री राधागोविन्द देव जी का सेवाकार्य कराना सर्वथा अनुचित था। उन्होंने यह भी सूचित किया कि श्रीश्री राधागोविन्द देव जी के बायीं ओर स्थापित श्रीमती राधारानीजी के श्रीविग्रह को हटा दिया जाय तथा श्रीश्री राधागोविन्द देव जी से पहले, उनके अवतारी श्रीश्री नारायण भगवान की पूजा की जानी चाहिए। दूसरी ओर उन्होंने श्रीश्री राधागोविन्द देव जी की सेवा करने वाले वैष्णव-ब्राह्मणों को भी सूचित कर दिया कि जब तक वे चार मुख्य वैष्णव सम्प्रदायों में से किसी एक के अन्तर्गत होने का परिचय पत्र प्रस्तुत नहीं करेंगे तब तक वे श्रीश्री राधागोविन्द देव जी की सेवा से वंचित रहेंगे। यह निर्णय उन लोगों ने लोक मुख में प्रचलित श्री

वेदव्यास जी की कथित वाणी के निम्नलिखित श्लोक की आड़ लेकर किया :-

सम्प्रदाय विहीना ये मंत्रास्ते विफलामताः।
अतः कलौ भविष्यन्ति चत्वारः सम्प्रदायिनः॥
श्री, ब्रह्म, रुद्र, सनका वैष्णवाः क्षिति पावनाः।
चत्वारस्ते कलौभाव्या ह्युतकले पुरुषोत्तमात्॥
रामानुजम् श्रीः स्वीचक्रे मध्वाचार्यं चतुर्मुखः।
श्रीविष्णु स्वामिनं, रुद्रः निम्बादित्यं चतुः सनः॥

(अर्थात् सम्प्रदाय विहीन मंत्र विफल होता है। कलियुग में चार वैष्णव सम्प्रदाय होंगे। श्री, ब्रह्म, रुद्र, सनक आदि चार सम्प्रदायों के वैष्णव धरती को पवित्र करने वाले होते हैं। श्री रामानुज श्री सम्प्रदाय के, श्री मध्वाचार्य श्री ब्रह्म सम्प्रदाय के, श्री विष्णुस्वामी श्री रुद्र सम्प्रदाय के और श्री निम्बार्क श्री सनक सम्प्रदाय के आचार्य होंगे।)

श्री नाभादास जी (जो श्री रामानन्द स्वामी जी के चतुर्थ अधस्तन थे) ने भी अपने द्वारा लिखित भक्तमाल नामक ग्रन्थ में चार वैष्णव सम्प्रदायों का उल्लेख करते हुए, श्री रामानुज जी को कल्पवृक्ष, श्री विष्णुस्वामी जी को भवसागर के जहाज़, श्री मध्वाचार्य को मेघ तथा श्री निम्बार्क को सूर्य के सदृश बताया है।

उपरोक्त मत के विशेष प्रचार के कारण, जन साधारण के मन में इस धारणा ने घर कर लिया था कि यदि कोई वैष्णव उपरोक्त चार सम्प्रदायों के अन्तर्गत होने का प्रमाण न दे सके तो वह वैष्णव माना जाने का अधिकारी नहीं हो सकता था।

श्री बालानन्द स्वामी और गलता गद्दी के तत्कालीन महन्त द्वारा गौड़ीय वैष्णव धर्माबलम्बी बंगाली वैष्णव-ब्राह्मणों को श्रीश्री राधागोविन्द देव जी की सेवा-पूजा से वंचित कर देने के कारण एक अजीव सी स्थिति पैदा हो गई। इस निर्णय ने जहाँ जयपुर के महाराजा

को असमंजस की स्थिति में डाल दिया, वहीं वृन्दावन के गौड़ीय वैष्णवों में भी खलबली मचा दी।

जयपुर के महाराजा ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए, श्री बालानन्द स्वामी वाले निर्णय को एक तरफा स्वीकृति प्रदान नहीं कर दी बल्कि इस समस्या का तर्क सम्मत समाधान ढूंढने के लिए चतुः वैष्णव सम्प्रदाय एवं गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के पंडितों की एक विचार सभा आयोजित की।

क्योंकि श्रीधाम वृन्दावन के गौड़ीय वैष्णवों के भविष्य पर जयपुर की विचार सभा के अंतिम निर्णय का प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी था, इसलिए वे इस ज्वलन्त समस्था के समाधान के लिए व्याकुल हो उठे। उस समय श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर पाद गौड़ीय वैष्णवों के सिरमौर थे और श्रेष्ठ आचार्यपद पर आसीन थे। पूरा गौड़ीय वैष्णव समाज उनकी छत्रछाया में स्वयं को सुरक्षित एवं सुप्रतिष्ठित अनुभव करता था। श्रीधाम वृन्दावन के सभी गौड़ीय वैष्णव गोस्वामी, महन्त, सेवाधिकारी और सामान्य वैष्णव इस घोर संकट की स्थिति से उबरने के लिए श्रील चक्रवर्ती पाद की शरण में गए। श्रील चक्रवर्ती पाद उस समय बहुत बृद्ध हो चुके थे और जयपुर जाने के लिए सक्षम नहीं थे। इसलिए उनकी इच्छनुसार दिग्विजयी पंडित श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी को जयपुर की गलता गद्दी की विचार सभा में गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व करने का सर्वसम्मत निर्णय लिया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती पाद के शिष्य श्री कृष्णदेवाचार्य भी कुछ अन्य पंडितों के साथ श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी के साथ विचार सभा में जायेंगे।

विचार सभा में जाने से पहले श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी ने गौड़ीय वैष्णवों की "श्यामानन्दी शाखा" के गुरुपाट के तत्कालीन महन्त तथा उनके परम गुरुदेव के ज्येष्ठ पुत्र श्रीश्री ब्रजजनानन्द देव

गोस्वामी प्रभुपाद जी की सेवा में श्रीपाट गोपीवल्लभपुर में एक पत्र भेजकर सभी विषयों से अवगत कराते हुए जयपुर की सभा में अपने विजय के लिए उनके आशीर्वाद की प्रार्थना की।

श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी श्रीधाम वृन्दावन से जयपुर पहुँचे और सीधे जयपुर के महाराजा द्वारा आयोजित गलता गद्दी के विचार सभा में उपस्थित हो गये। विचार सभा में भाग ले रहे चारों वैष्णव सम्प्रदायों के प्रतिनिधियों ने श्रील बलदेव जी का स्वागत करते हुए, जयपुर के महाराजा को वचन दिया कि यदि श्रील बलदेव जी अपने सम्प्रदाय (गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय) को शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विशुद्ध सम्प्रदाय के रूप में प्रतिष्ठित कर देंगे, तो वे सब (दूसरे सम्प्रदायों के प्रतिनिधि) उनके (श्रील बलदेवजी के) शिष्य बन जायेंगे। इस औपचारिक घोषणा के बाद वाद-विवाद आरम्भ हुआ। चारों सम्प्रदायों के प्रतिनिधियों ने एड़ी चोटी का ज़ोर लगाते हुए गौड़ीय सम्प्रदाय को अप्रतिष्ठित करने का प्रबल प्रयास किया, किन्तु श्रील बलदेव जी ने उनके तर्कों को काटते हुए वेद-वेदान्त, उपनिषद्, श्रीमद्‌भागवत एवं अन्य पुराणों और उपपुराणों आदि से प्रमाण देकर श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के द्वारा आचरित और प्रवर्त्ति गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय की श्रेष्ठता को दृढ़ रूप से स्थापित करने में सफलता पाई। उनकी अकाट्य युक्तियों के आगे दूसरे सम्प्रदायों के प्रतिनिधियों की युक्तियाँ खण्ड-खण्ड होकर बिखर गईं और उन लोगों ने गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय की सैद्धान्तिक श्रेष्ठता को मान भी लिया, किन्तु अन्तिम पासा फैंकते हुए यह तर्क प्रस्तुत किया कि हर सम्प्रदाय का अपना वेदान्त भाष्य होता है पर गौड़ीय सम्प्रदाय का कोई निजी भाष्य नहीं था। इस आधार पर उन लोगों ने गौड़ीय सम्प्रदाय को मान्यता देने में असमर्थता व्यक्त की। अपने उत्तर में श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी ने स्पष्ट किया कि गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक

श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी ने भगवान वेदव्यास जी प्रणीत श्रीमद्‌भागवत महापुराण को ही ब्रह्मसूत्र के भाष्य के रूप में निरूपित किया था। इस कारण से उन्होंने पृथक भाष्य की रचना नहीं कराई थी, यद्यपि उन्होंने विशेष शक्ति का संचार करके श्रील सनातन गोस्वामी, श्रील रूप गोस्वामी, श्रील जीव गोस्वामी और श्रील गोपाल भट्ट गोस्वामी आदि के द्वारा अनेक गौड़ीय ग्रन्थों की रचना करवाई थी। श्रील जीव गोस्वामी द्वारा रचित षट् सन्दर्भ ग्रन्थ इस का स्पष्ट प्रमाण था।

मगर, चारों सम्प्रदायों के प्रतिनिधियों ने उपरोक्त मत को स्वीकार न करते हुए जोर देकर कहा कि श्रीमद्‌भागवत महापुराण की रचना, श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के आविर्भाव से बहुत पहले हो चुकी थी। उन लोगों ने यह भी कहा कि श्रीमद्‌भागवत महापुराण केवल गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय का नहीं, उनके सम्प्रदायों का भी भाष्य था। इसलिए इसको केवल गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय का भाष्य नहीं माना जा सकता था। उन लोगों ने जोर देकर कहा कि एक स्वतन्त्र वैष्णव सम्प्रदाय के रूप में मान्यता के लिए पृथक भाष्य रहना आवश्यक था। इस आधार पर उन लोगों ने श्रीश्री गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय को मान्यता देने में असमर्थता व्यक्त करते हुए कहा कि आदि शंकराचार्य के समय से यही नियम चला आ रहा था कि हर सम्प्रदाय का अपने सिद्धान्तों के अनुकूल श्रुति, स्मृति और न्याय नामक तीनों प्रस्थानों का भाष्य अवश्य हो। श्रुति प्रस्थान उपनिषद, स्मृति प्रस्थान श्रीमद्‌भगवद् गीता और न्याय प्रस्थान-वेदान्त होता था, जिनके भाष्यों के बिना किसी भी सम्प्रदाय को मान्यता मिलना असम्भव था। उन लोगों के ऐसे रवैये को देखते हुए श्रील बलदेव जी समझ गए कि विरोधी पृथक् भाष्य के बिना गौड़ीय सम्प्रदाय को मान्यता नहीं देंगे। इसलिये उन्होंने निश्चित समय में भाष्य प्रस्तुत करने का वचन दिया और इसके लिए पक्ष काल समय भी ले लिया।

श्रीश्री गोविन्द भाष्य

निश्चित पक्षकाल समय में भाष्य प्रस्तुत करने का वचन देकर, श्रील बलदेव जी कुछ अशान्त और चिन्तित से हो गए। यह वास्तव में घोर संकट का समय था उनके लिए, जिससे त्राण पाने के लिए वे जयपुर में विराजमान श्रीश्री राधागोविन्द देव जी की शरण में गए। भक्त को अशांत जानकर ठाकुरजी ने तीन रात्रियों में स्वप्न में उनको क्रमशः तीन निर्देश प्रदान किये। पहली रात्रि के स्वप्नादेश में केवल इतना ही कहा 'कुरु'। श्रील बलदेव सन्देहावस्था में थे, इसलिए वे इस छोटे से प्रथम स्वपनादेश को समझ न पाए। उनका सन्देह बना रहा। इसे देखते हुए ठाकुरजी ने दूसरी रात्रि के स्वपनादेश में कहा, 'कुरु तव भविष्यति'। इस स्वपनादेश से भी श्रील बलदेव जी सन्देह से उबर न पाये। अन्ततः ठाकुर जी ने तीसरी रात्रि के स्वपनादेश में कहा, 'ब्रह्म सूत्राणि व्यचक्ष। तत् भाष्यम् ते सेत् स्यति।' इस आदेश से बलदेव जी संदेह तथा अनिश्चय की स्थिति से उबर आए और उन्होंने तीनों प्रस्थानों के अंतर्गत, श्रीमद् ब्रह्मसूत्र के श्रीश्री गोविन्द भाष्य, गीता भूषण भाष्य, श्रीगोपाल तापनी व दशोपनिषद भाष्य की रचना निश्चित समय में कर दी। सन् १७१८ ईस्वी में जब उन्होंने इन तीनों भाष्यों को जयपुर के पण्डितों की सभा में प्रस्तुत किया तो उन (पण्डितों) के आश्चर्य की सीमा न रही। वे श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के द्वारा प्रवर्तित गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय को सर्वोत्कृष्ट पंचम सम्प्रदाय के रूप में मान्यता प्रदान करने के लिए बाध्य हो गए, जिसके फलस्वरूप इस सम्प्रदाय पर मंडरा रहे अनिश्चितता के बादल छ्ट गए।

श्रीश्री राधागोविन्द देव जी के गौड़ीय वैष्णव पुजारियों को (जिन्हें पहले सेवा कार्य से मुक्त कर दिया गया था) दोबारा सेवा कार्य भार सौंप दिया गया। उस समय से जयपुर, गलता, करौली, श्रीधाम वृन्दावन और भारत के कई अन्य स्थानों पर गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के व्यक्तियों

के द्वारा श्रीविग्रहों की सेवा का अधिकार और सुदृढ़ हो गया। श्रील बलदेव जी इस सम्प्रदाय के त्राता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनकी विद्वत्ता से चमत्कृत होकर जयपुर के तत्कालीन महाराजा ने उनके प्रति विशेष सम्मान प्रकट करते हुए उनको "विद्याभूषण" की उपाधि से विभूषित किया और तब से उनका नाम हो गया 'श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद'।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, विचार सभा के आरम्भ में चतुःसम्प्रदाय के पंडितों ने, जयपुर के महाराजा के सम्मुख प्रतिज्ञा की थी कि यदि श्रील बलदेव जी गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय को शास्त्रीय प्रमाणों के द्वारा शुद्ध सम्प्रदाय सिद्ध कर देंगे तो वे (चतुः सम्प्रदाय के पण्डित) श्रील बलदेव जी का शिष्यत्व ग्रहण कर लेंगे। अब जब उन लोगों ने श्रील बलदेव जी के पांडित्य से हार कर इस सम्प्रदाय को सर्वोत्कृष्ट पंचम सम्प्रदाय के रूप में मान्यता प्रदान कर दी तो वे सब पंडित अपनी प्रतिज्ञा की विवशता के कारण, वैष्णव चूड़ामणि श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी के सम्मुख, अपना शिष्य बनाने की प्रार्थना लेकर उपस्थित हुए परन्तु, अपनी विशाल हृदयता का परिचय देते हुए श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी ने उन सबको अपने-अपने सम्प्रदाय में ही बने रहने के लिए कहा। हाँ, अपनी विजय के प्रतीक के रूप में, उन्होंने गलता गद्दी में 'श्रीश्री विजय गोपाल' जी की सेवा का प्रकाश किया और यह नियम लागू किया कि गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय द्वारा प्रतिष्ठित इन ठाकुर जी की आरती, वहाँ पर विराजमान अन्य सभी श्रीविग्रहों से पहले की जायेगी।

गलता गद्दी के विचार सभा में गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय की विजय पताका फहरा कर, श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी, श्रीधाम वृन्दावन लौट आये। बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे बृजवासी गौड़ीय वैष्णव गोस्वामियों, महंतों, सेवाधिकारियों, सामान्य वैष्णवों एवं

नागरिकों ने उनका भव्य स्वागत किया। उन सबने उनका (श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी का) अपने त्राता एवं रक्षक के रूप में कोटिशः धन्यवाद किया और उन्हें अपना सिरमौर मानकर सिर-आँखों पर बिठाया।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, श्रील बलदेव जी ने जयपुर रवाना होने से पहले, श्रीश्रीश्यामानन्दी गद्दी के तत्कालीन महन्त श्रीश्री ब्रजजनानन्द देव गोस्वामी प्रभुपाद जी को श्रीपाट गोपीवल्लभपुर में पत्र प्रेषित करके, उनके आशीर्वाद की याचना की थी। उस पत्र की प्राप्ति पर, पूज्य श्री महन्त जी नाव के द्वारा श्रीधाम वृन्दावन के लिये रवाना हो गए थे। वे श्रीगंगा पथ से त्रिवेणी होते हुए, श्रीयमुना जी के प्रवाह पथ द्वारा, श्रीधाम वृन्दावन पहुँचे। श्रील बलदेव जी की विजय के विषय में जानकर वे बहुत ही प्रसन्न हुए। उन्होंने श्रील बलदेव जी को, श्रीमती राधारानी जी के हृदयकमल से प्रकट एवं श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी द्वारा सेवित तथा अपने सेव्य श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी का सेवाधिकारी के रूप में नियुक्त कर दिया। सेवा का कार्यभार सम्भालने पर, श्रील बलदेव जी ने अनुभव किया कि श्रीमती राधारानी जी के हृदयकमल से प्रकट श्रीश्री श्यामसुन्दरजी के श्रीविग्रह आकार में बहुत छोटे थे और उनका अपनी इच्छानुसार श्रृंगार आदि करना बहुत ही कठिन था। बहुत अधिक समय लगाकर और परिश्रम करके भी श्रृंगार में वह आकर्षण नहीं आ पाता था, जो वे चाहते थे। उन्होंने अपने जयपुर वास के समय, श्रीश्री राधागोविन्द देव जी के सर्वोत्कृष्ट श्रृंगार के दर्शन किये थे और वे चाहते थे कि श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी का श्रृंगार उस से भी उच्च स्तर का हो। पर यह तभी सम्भव था जब मंदिर में आकार में श्रीश्री राधागोविन्द देव जी जैसे बड़े श्री विग्रह स्थापित एवं प्रतिष्ठित किये जाते। उन्होंने इस विषय में, महन्त श्रीश्री ब्रजजनानन्द देव गोस्वामी प्रभुपाद जी से प्रार्थना की और उनसे बड़े श्रीविग्रह की

स्थापना के लिए अनुमति भी प्राप्त कर ली। फिर क्या था? उन्होंने अपने जन्मस्थान उड़ीसा के वालेश्वर जिले के अन्तर्गत रेमुना के निकटवर्ती अठान्तर के सन्निकटस्थ नीलगिरि से शिलाखण्ड मंगवाकर अपने स्वप्नों के इष्टदेव श्रीश्रीश्यामसुन्दर जी के अनिन्द्यसुन्दर बड़े श्रीविग्रह का निर्माण करवाया और अष्टधातु से निर्मित श्रीमती राधारानी जी के श्रीविग्रह के साथ रत्न सिंहासन पर उनकी स्थापना, सन् १७१९ ईसवी की बसंत पंचमी वाले दिन, श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर मन्दिर के मध्यस्थल पर करके अपने मन की तीव्र अभिलाषा पूर्ण की। आज दिन तक उनके द्वारा स्थापित परम्परा के अनुसार ही श्रीश्री राधाश्यामसुन्दरजी का नित्य एवं नैमित्यिक श्रृंगार होता चला आ रहा है, जो भक्तों के मन को बरबस मोह लेता है। विशेष रूप से अक्षय तृतीया के चन्दन श्रृंगार और कार्त्तिक नियम सेवा के ३५ दिन ३५ प्रकार के लीलाओं के श्रृंगार तो और भी अधिक मनमोहक होते हैं।

श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी का सेवाधिकारी नियुक्त किये जाने के तुरन्त बाद, श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी ने श्रीधाम वृन्दावन में चारों सम्प्रदायों में प्रथम मंगला आरती श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी के मन्दिर में होने की प्रथा चालू की जो आज तक जारी है। जयपुर की विचार सभा से लौटने के पश्चात्, वे निरन्तर श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी की प्रेम सेवा में ही रहे। यहाँ रहकर ही इन्होंने अपने अधिकांश ग्रन्थों की रचना की। श्रीश्री गोविन्द भाष्य के उपसंहार में उन्होंने लिखा है कि :-

विद्यारूपं भूषणं मे प्रदाय, ख्यातिं निन्येतेन यो मामुदारः।
श्रीगोविन्दः स्वप्ननिर्दिष्टोभाष्यो राधावन्धुर्वन्धुरांगः स जीयात्।।

अर्थात् :- जिन महान व उदार दाता ने मुझे विद्यारूपी भूषण प्रदान करके "विद्याभूषण" उपाधि से ख्याति दिलाई और श्रीश्रीगोविन्द जी की मूर्ति के रूप में स्वप्न में मेरे सामने प्रकट होकर निर्देश देकर

मेरे द्वारा अपने वेदान्त रूपी शब्दब्रह्म विग्रह के भाष्य का निर्णय किया, वे त्रिभंगिम रम्य मूर्त्ति श्रीश्रीराधाबन्धु, श्रीश्री श्यामसुन्दर जी जययुक्त हों, सर्वोत्कर्ष से विराजमान हों।

श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी द्वारा विरचित एवं आज तक उपलब्ध ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं :-

न्याय प्रस्थान :-

श्रीब्रह्मसूत्र का श्रीश्री गोविन्द भाष्य

श्रुति प्रस्थान :-

श्रीगोपाल तापनी उपनिषद भाष्य, ईशादिदशोपनिषद भाष्य

स्मृति प्रस्थान :-

१. श्रीश्री गीताभूषण भाष्य
२. श्रीश्री विष्णु सहस्रनाम भाष्य श्रीनामार्थसुधा
३. सिद्धान्तरत्न भाष्यपीठक
४. प्रमेय रत्नावली
५. सिद्धान्त दर्पण
६. वेदान्त स्यमन्तक
७. श्रीमद्भागवत टीका वैष्णवानन्दिनी
८. साहित्य कौमुदी
९. साहित्य कौमुदी टीका, श्रीकृष्णानन्दिनी
१०. ऐश्वर्य कादम्बिनी
११. काव्य कौस्तुभ
१२. छन्दः कौस्तुभ भाष्य
१३. श्रीलघु भागवतामृत टिप्पणी, सारांगरंगदा
१४. नाटक चन्द्रिका टीका
१५. स्तवमाला विभूषण भाष्य
१६. श्रीतत्त्व संदर्भ टीका
१७. श्रीश्री श्यामानन्द शतकम् टिप्पणी

१८. व्याकरण कौमुदी

१९. गुप्त धाम छत्र

श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी के केवल दो शिष्यों के नाम आज तक मालूम हो सके हैं, जो इस प्रकार हैं :-

१. श्रीनन्द मिश्र - सिद्धान्त दर्पण के टीकाकार

२. श्रीउद्धव दास - उपासना पद्धति के रचयिता

श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी ईसवी सन् १७६८ में गंगा दशहरे वाले दिन ९० वर्ष की अवस्था में श्रीधाम वृन्दावन में, अपने द्वारा सेवित श्रीश्री राधाश्यामसुन्दरजी की प्रेम सेवा के दौरान श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी की नित्यलीला में प्रविष्ट हुए। उनकी समाधि, अपने एवं श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी द्वारा सेवित श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी के मंदिर के पश्चात् भाग में परिक्रमा मार्ग पर विराजमान है।

श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी द्वारा विरचित बृजबोली (भाषा) में एकमात्र पद

जै जै मंगल आरती दुंहुकी।
श्याम गौरी छवि उठई झलकि॥
नव घने जनु थिर विजुरि विराजे।
ताहे मणि आभरण अंगहि साजे॥
करे लई दीपावली हेम थारी।
आरति करतहि ललिता आली॥
सबहुं सखीगण मंगल गावे।
कोई करतालि देई कोई वाजावे॥
कोई कोई सहचरी मनहिं हरिखे।
दुहुंक अंग पर कुसुम वरिखे॥
इह रस कहतहिं बलदेव दासे।
दुहुं रूप माधुरी हेरईते आशे॥



श्रीश्री गौड़ीय भाष्यकार वेदान्ताचार्यवर्य

श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी का मार्मिक सूचक कीर्तन

–श्री परमानन्द दास शास्त्री

जयरे जयरे जय श्रील बलदेव जय
गौड़ीय गोविन्द भाष्यकार।
एकबार प्राण भरे जय दाओ भाई।
श्रील बलदेव चन्द्रेर एकबार प्राण भरे जय दाओ भाई।
श्री गोविन्द भाष्यकारेर एकबार प्राण भरे जय दाओ भाई।
वेदान्ताचार्य श्री बलदेवेर एकबार प्राण भरे जय दाओ भाई।
गौड़ीय वेदान्ताचार्येर एकबार प्राण भरे जय दोओ भाई।
श्यामानन्दी चूड़ामणिर एकबार प्राण भरे जय दोओ भाई।

जगत् वरेण्य पूज्य श्री वेदान्ताचार्य वर्य
विद्याभूषण सुख्याति जांहार॥१॥
चैतन्येर सेनाध्यक्ष्य एकले सहस्र मन्य
रक्षा कैल चैतन्येर गण।
दैन्य शास्त्रे सुपण्डित (स्वीय) परिचय ना कैल व्यक्त
गोस्वामीगण जांहार प्राण॥२॥
वैराग्य धर्म्म हृदे धरि महाप्रभु मर्म्म स्मरि
गोस्वामी गणेर आनुगत्ये।
(श्री) चक्रवर्ती पादाश्रय कैला श्री गुरु कृपाय
सु–साधिला अनन्य एकान्ते॥३॥

निज परिचय जिनि नाहि दिला दैन्यगणि
तांर प्राकट्य कहि किमते ?
हरिदास दास मते यतेक सु-अन्वेषिते
जन्मलीला गाहिव तेमते ॥४॥
यद्यपि श्रीकृष्णगोपालानन्दजी श्री हरिदास दासजी
जन्म बलेन रेमुनार पाशे।
श्री गोंसाई जी अन्वेषि श्री चित्रपट प्रकाशि
बलदेवे करिलेन प्रकाशे ॥५॥
पितामाता नामोद्देशे कत यत्न कैल शेषे
कोथाओ ना पाईल सेई सब।
गाहिवारे नाहि पाई तिंह जन्मलीला भाई
तांर बाल्यलीलार किछु लव ॥६॥
महाप्रभु नरु बलि पद्मातीरे कुतुहली
यथा नरोत्तमे प्रकाशिल।
तथा श्यामानन्द प्रभु बलदेव बलि कभु
बारत्रये तांरे आकर्षिल ॥७॥
रेमुना निकटे ग्रामे अठान्तर यार नामे
उच्च ब्राह्मण भक्त कुले।
अग्रहायण मासोत्तमे शुक्ल प्रतिपद दिने
जन्मावधि विद्यारसे बुले ॥८॥
कर्णाटेर महीशूरे अति प्रफुल्ल अन्तरे
त्वरा यान विद्या आशे माति।
तथा तत्त्ववादि मठे वेदान्तादि पड़ि ठांटे
हईला सन्यासी कुलपति ॥९॥

विद्यामदे माति अति शास्त्र युद्धे नित्य प्रति
नित्य मथे पण्डित समाज।
भारतेर नानास्थाने यथा शोभे विद्वज्जने
सेई सब जिति महाराज॥१०॥

ऐछे श्री श्री क्षेत्रे तबे आसि अति हर्षोत्सवे
पुरी धाम विजय करिया।
शुनिलेन कुब्जमठे दामोदर देव भ'टे
गोस्वामीगण मदे मातिया॥११॥

तिंह वैष्णव चूड़ामणि पाण्डित्ये सिद्धान्त खनि
दैन्ये गोस्वामी गणेर तुल्य।
ना करिया शास्त्र चर्च्चा लिखि दिवे तंहि पर्च्चा
तर्केर सेखाने नाई मूल्य॥१२॥

कि? विद्यावत्तार मान ना हईवे निरूपण
वृथाय हईवे पराजय।
गौरगणे किवा आछे शास्त्रे कत मर्म्म बाछे
किरुपे से सकल बूझय?॥१३॥

एत चिन्ति बलदेव तर्कनिष्ठ अधिदेव
षट् सन्दर्भेर पड़िवार छले
राधादामोदर पार्श्वे चलिलेन तबे हर्षे
बुद्धिते जिनिव नहे बले॥१४॥

पाण्डित्य उचित ठांटे गेलेन कुब्जमठ बाटे
दामोदर देव सन्निधाने।
श्री वैष्णव वर्य तिंह देखि धूलि धूसरित
दण्डवत पड़िलेन ताने॥१५॥

बलदेव मुशकिले पड़िलेन सेई काले
अग्रे दण्डवत बिना युद्धे।
निरुपाये सेई काले दण्डवते तिंह बले
सन्दर्भ शिखाओ हेन मुग्धे ॥१६॥
दिने दिने दिन याय बलदेवेर धी क्षय
प्रबुद्धये श्री जीवेर सिद्धान्ते।
यत तार तर्क छिल सन्दर्भे सब हरिल
राधा दामोदरेर व्याख्यान्ते ॥१७॥
चमत्कृति शास्त्र युक्ति खण्डनेर प्रथा सूक्ति
निखिल वेद वेदान्त मथि।
श्री जीव गोंसाई भाई जीवेरे सदय हई
लिखिलेन सन्दर्भ सारथि ॥१८॥
भेदाभेद द्वैत वाद द्वैताद्वैत विशिष्ट वाद
अचिन्त्य भेदाभेदे हरिया।
दिव्य प्रेम पुरुषार्थ जीवेर से परमार्थ
भक्ति धर्मे दिलेन ग्रथिया ॥१९॥
चमत्कार बलदेव गति दामोदर देव
पड़िलेन चरणे तांहार।
तिंह तुलि वक्षे धरि दीक्षा दानि योग्य करि
एकान्ति गोविन्द दास नाम यार ॥२०॥
पाठालेन ब्रजवने चक्रवर्त्ती सन्निधाने
भागवतादि पड़िल याहाते।
भक्ति धर्मे प्रार्थी हये पीताम्बर दास ताहे
कैल प्रवीण भक्तिर शाखाते ॥२१॥

उदग्र भजनावेशे माधुकरी से निशांसे
एक काले किञ्चित भोजन
वृन्दावनेर कुञ्जवने राधाश्यामसुन्दर सने
अपूर्व ऐकान्तिक भजन ॥२२॥
हेन काले जयपुरे गोविन्देर पूजारीरे
अप सम्प्रदाय कहि त्यजय।
चतुःसम्प्रदाय मिलि बालानन्द स्वामी मौलि
कहे गौड़ीय अप सम्प्रदाय ॥२३
राजा अति भक्तिमान मीमांसाते यत्न हन
गलताय सभा बोलाईला।
वृन्दावने अग्रवर्ती विश्वनाथ चक्रवर्ती
तत् काले समासीन छिला ॥२४॥
तिंह वयोवृद्ध अति जयपुरे येते नति
एकान्ति गाविन्दे बोलाई।
सेंह विद्या वारिधि गौर गने अध्युर्य्युधी
कृपा सञ्चारि तांहे प्रेरिल ॥२५॥
वैराग्ये मलिन वेशे करंग कौपीन वासे
सभा सन्निधाने उपनीत।
चतुःसम्प्रदायी सुखे चतुर्योग्यासनालोके
विराजि आछेन अपेक्षित ॥२६॥
देखिलेन कि अद्‌भुत आचार्येर हेन रीत
आसने नमि निम्ने बसिला।
बलिलेन तिंह सबे आसने बसिते तबे
आचार्य विराजित से कहिला ॥२७॥

मुई आचार्य प्रतिनिधि तिंह दास्य सेवा साधि
ओ आसने बसि कोन रीते?
माल्यादि समर्प तांने कह सभा कि कारणे
कहे तव सम्प्रदाय कि मते? ॥२८॥

तर्क जाले समावृत्त सभासद् मण्डलित
चतुः सम्प्रदाय सर्व्वमान्य।
एह गौड़ीय अद्भुत पञ्च वा कोन सम्मत?
अप सम्प्रदाय ताई गण्य ॥२९॥

श्रीपाद तर्क सामान्ये जगजन सर्व्व मान्ये
इतः पूर्वे छिलेन वरीयान।
दिने तार्किक शतेर झड़ तुलि वेदान्तेर
माथा खाई हैतेन पूजीयान ॥३०॥

राधा दामोदर प्रभु कृपा कैला गौर विभू
यखन हैते अति कारुण्ये।
दैन्येर अति तारुण्ये शिरे धरि कृपा धन्ये
चक्रवर्त्ती पार्श्वे गिरि वन्ये ॥३१॥

थाकि अति वैराग्ये मजि भागवत रंगे
गौर प्रेमे भजन स्मरण।
नाम गाने निष्ठा क्रम यत गुरु कृपा मर्म्म
सदा तन्मये से आचरण ॥३२॥

अति दैन्ये विभूषित गौर प्रेमे निर्म्मंछित
मग्न हैला छेदि तर्क जाल।
राधा प्रेमे डगमग एकान्तिते यत रंग
जपिते जपिते हैला विह्वल ॥३३॥

आजि पुनः सेई रंग　　　　आदेशे से स्मृति भंग
देखिलेन सेई तार्किक दल।
श्रीगुरु गणे प्रणमि　　　　थांकि गौर गण धर्म्मी।
वन्दिला राधागोविन्द युगल ॥३४॥

सभासदे करि नमन　　　　प्रश्न दृष्टे हई मगन
कैला आद्योपान्त्य गौर तत्त्व
आदितत्त्व परतत्त्व　　　　गौर एक अनाद्यन्त्य
निरूपिला गौरे सर्व्व सत्त्व ॥३५॥

लीलार निमित्त सेई　　　　राधाकृष्ण हैया दुई
विलसे श्री ब्रजे निरन्तर
शतकोटि गोपीसने　　　　काम क्रीड़ा निरजने
(यांर) रासोल्लासे आनन्द अपार ॥३६॥

तथापि से राधानाथ　　　　राधा बिनु है अनाथ
श्री राधा प्रेमे सदा विह्वल
राधा प्रेमे किवा मधु　　　　साधिते हे न'दे इन्दु
भक्तभावे तबु माध्वे स्वी कैल ॥३७॥

तिंह सिद्धान्तिते याहा　　　　श्रीमाध्वेर मत ताहा
प्रमाण प्रमेय सेई मत।
सेई रूपे गौर हरि　　　　सार्वभौम सुनिस्तारि
गुरु परम्परा सुसम्मत ॥३८॥

अत कहे सम्प्रदाय　　　　कैछे वृद्धि पञ्च भाइ?
तोमा सबार एई अज्ञता
शास्त्र सिद्धान्त सम्मत　　　　गौर माध्वाचार्ये युक्त
निगूढ़ सत्ये ज्ञानेर व्यर्थता ॥३९॥

सेई ज्ञान युक्ति युक्त प्रेम भक्ति अनुगत
केवल ज्ञाने निरीश्वरता
वेदान्तेर या कचकचि तर्क वितर्के अशुचि
शंकरेर मायिक भनिता ॥४० ॥

से निस्तारि गौरहरि पूर्वे खण्ड खण्ड करि
श्री सार्वभौम प्रकाशानन्दे।
श्री चरण सुखार्णवे डुबाईला प्रेम भावे
याहे मजि भासे प्रेमानन्दे ॥४१ ॥

श्री गोविन्देर नित्यत्व तर्क तुलि सुविस्तृत
पुनः वेदान्तेर झड़ तुलि।
न्याय वैशेषिक यत एके एके तुलि तत
निवृत हैला भाष्य नाई बलि ॥४२ ॥

पक्षकाल समय लईया गोविन्दे शरण हैया
श्री गोविन्द भाष्य देखाईल।
प्रस्थान त्रय सहित भाष्य कैला कि अद्‌भुत
या देखि सबे विस्मित हैल ॥४३ ॥

शर्त छिल सभारम्भे हारिले शिष्य हईवे
सबे हारि तांर शरण लैल।
श्रीपाद विरक्त श्रेष्ठ गौर पद यांर प्रेष्ठ
शिष्य करिते से ना चाहिल ॥४४ ॥

यदि सबे मान्य मान भज सबे गौर चरण
पण दाये शिष्य हईवे केने?
भज गौर पद द्वन्द्व मिटे यावे भव बन्ध
कलि घोरे (एई) परम साधने ॥४५ ॥

राधा गोविन्द युगल जेनो गो गौर सकल
प्रेम पाथारे सुखेर सांतार।
तांहार सेवार तबे सबे आनुकूल्य करे
एईमत मोर अंगीकार॥४६॥

मुंई तो हे गुरु नई दास हैते साध लई
श्री विजय गोपाल प्रतिष्ठिब।
तथा श्रीश्यामसुन्दर रचिव ब्रज सुधाकर
आरत्रिक सर्वाग्रे ज्वालिव॥४७॥

एई मत प्रतिश्रुति करि एला ब्रजे यदि
नील गिरिर काल शिला आनि।
गड़ि श्री श्यामसुन्दर राई सह अति सुन्दर
प्रतिष्ठिले बसन्त पञ्च दिनि॥४८॥

निरुपम स्व-माधुरी आ-मरि कि मरि मरि
निकुञ्ज वन आलो करिया।
झलमल मणि काञ्चने दिव्य वेश विभूषणे
मनोहरे वनमाला परिया॥४९॥

मंगलार अग्र ताने सकलेर प्राण टाने
दिशारी हय सबा दर्शनेर
अद्यापिह सेई मत हरे मन आछे यत
श्री निकुञ्ज शोभि सकलेर॥५०॥

एहेन गड़ि परिखा धरि विद्याभूषणाख्या
दृढ़ाईते यत ग्रन्थ रचि।
गौड़ीयार भाग्याकाश करिया दिव्य प्रकाश
चिरजीवी हैला श्याम अर्चि॥५१॥

खृष्ट सतेर अष्ट षष्ठे गंगा दशहरा तिथि श्रेष्ठे
श्री राधाश्यामसुन्दर सेवि सेवि।
नित्य परिकर नित्ये चलिला नित्य निकुञ्जेते
श्री राधादासी बलदेवी ॥५२॥

जय जय बलदेव (गौर) गणेर सेनानी।
कोथा फांकि दिये लुकाले ओहे अग्रणी ॥५३॥

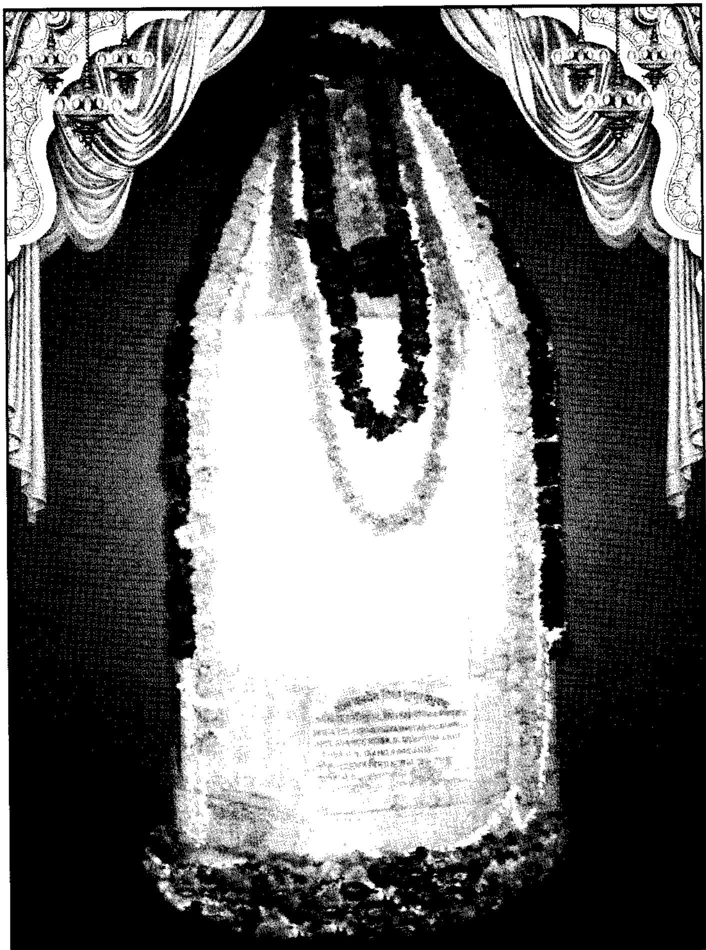
फांकि दिये कोथा लुकाले।
आज चौदिके आंधार छान्दे फांकि दिये कोथा लुकाले।
संकट मोदेर सर्व काले फांकि दिये कोथा लुकाले।
के उड़ाबे विजय ध्वजा संकट काले फांकि दिये कोथा लुकाले।
कोथा लुकाईये करछो खेला।
आछो बुझि ग्रन्थ रूपे।
याओ नाई कोथाओ यावे ना आछो बुझि ग्रन्थ रूपे।
आछो कायिक मात्र अदर्शने आछो बुझि ग्रन्थ रूपे।
किन्तु आज एकबार देखा दाओ।
मोरा एसेछि तोमाय देखवो बले किन्तु आज एकबार देखा दाओ।
बड़ आशा करे एसेछि मोरा किन्तु आज एकबार देखा दाओ।
(मातान)

सिद्धान्ते राखिला भक्ति श्री जीव गोसांई।
ए सम्प्रदाय रक्षिते तव तुल्य नाई ॥५४॥
श्री गोविन्द भाष्यादि रूपे (तुमि) हैला चिरजीवी।
नैले ए गौर गणे रक्षिते केवा सम्भवी ॥५५॥

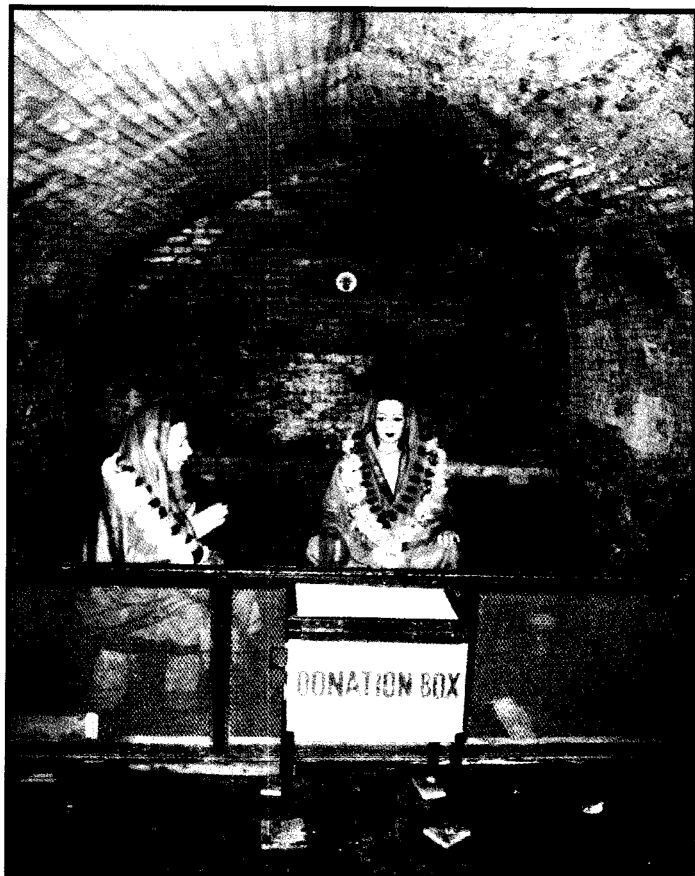
केवल श्यामानन्दिगणेर नओ गो तुमि।
(ओ हे) गौर गणाकाशेर उज्ज्वल दिनमणि ॥५६॥
कत कत ध्रुव तारा एलो गौर गगणे।
तब यश सबे घोषे सर्व गौर गणे ॥५७॥
किवा गाहिव आर मुंई किवा जानि।
नरकेर कीट मुंई लघिष्ठ चूड़ामणि ॥५८॥
गुरु वैष्णव श्री नामे दिओ श्रद्धा भक्ति।
आकण्ठ भरि गाई तोमादेर यश कीर्ति ॥५९॥
तव शास्त्र समुद्रे ओ गो दाओ अधिकार।
गोस्वामी ग्रन्थ तथा सब तदुपरि आर ॥६०॥
निशि दिशि गाईब गुण ओ यश बाखान।
(दीन) परमानन्द दास मांगे भागवत जीवन ॥६१॥

श्रील परमानन्द दास शास्त्री जी, श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के द्वारा प्रवर्त्तित गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का आचरण करने वाले एक आदर्श विरक्त वैष्णव थे। उन्होंने श्रीश्री रसिकानन्द देव गोस्वामी प्रभु जी और श्रीश्री बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी के सूचक कीर्तनों आदि की रचना की थी। मगर दुर्दैव वश इन सूचक कीर्तनों का प्रकाश होने से पहले ही उन्होंने ब्रजरज प्राप्त कर ली। उपरोक्त सूचक कीर्तन का प्रकाश, इन विरक्त शिरोमणि के प्रति हमारी आन्तरिक श्रद्धांजलि का ही प्रकाश है।

–श्रीश्री कृष्णगोपालानन्द देव गोस्वामी प्रभुपाद



श्रीधाम वृन्दावन में श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी के श्रीमन्दिर की पश्चात् भाग में परिक्रमा मार्ग में विराजमान श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी की समाधि



श्रीधाम वृन्दावन में श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी के
श्रीमन्दिर परिसर में श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी के
इस भूगर्भस्थ भजन कुटीर में
श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद जी ने उनके बहुत
ग्रन्थों की रचना की थी।